B.A. II Hindi Hons

आदिकाल की प्रवृत्तियां : का शेषांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एल०एन० कॉलेज, जहानाबाद

(3) संकुचित राष्ट्रीयता :- उस समय राष्ट्र शब्द से संपूर्ण भारत का बोध नहीं होकर छोटे-छोटे राज्यों का ही बोध होता था। चूंकि उस समय राज्य बहुत छोटे-छोटे होते थे और चारण कवि अपने आश्रयदाताओं की प्रतिष्ठा एवं गरिमा को बढ़ा-चढ़ा कर गान किया करते थे। वे उस छोटे से राज्य को ही राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करते थे और अपने आश्रयदाता को चक्रवर्ती, सम्राट आदि विशेषणों से संबोधित करते थे। इसका अत्यन्त भीषण दुष्प्रभाव इस भारत भूमि पर पड़ा और देश में व्यापक राष्ट्रीय चेतना का अभाव हो गया जिसके कारण भारत शताब्दियों तक गुलाम रहा। यदि उस काल में राष्ट्रीय चेतना सच्चे अर्थों में वर्तमान होता तो देश इस विकट स्थिति में नहीं पड़ता और इसकी स्थिति के मानचित्र पर कुछ अलग होती।

(4) जन जीवन से कटा हुआ साहित्य :-
इस काल के ग्रंथों में जन-जीवन के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब दिखायी नहीं पड़ता। इसका मूल कारण है कि तत्कालीन साहित्य पूर्णतः सामन्ती प्रभाव में था। जो साहित्यकार थे उनका समाज के प्रति कोई दायित्व नहीं था। वे तो एकमात्र अपने आश्रयदाता को ही ध्यान में रखकर अपनी कृतियों का सृजन करते थे। यही कारण था कि जन सामान्य साहित्य के क्षेत्र से दूर होता गया और राजपरिवार की ही प्रधानता साहित्य में उभर आया। यही कारण है कि कवियों के जीवन में भी जो हास-परिहास आदि रहे थे उसे भी वे साहित्य से दूर ही रखते थे। सच में इस युग का साहित्य तत्कालीन समाज के बीच गढ़े जाने के बावजूद भी तत्कालीन स्थितियों से अप्रभावित रहकर अछूता बना रहा।

(5) डिंगल एवं पिंगल भाषा :- इस काल के काव्यों में यह सामान्य प्रवृत्ति पायी जाती है - डिंगल भाषा का प्रयोग। आज के विद्वान साहित्यिक राजस्थानी भाषा को डिंगल भाषा कहते हैं। यह भाषा वीरोचित भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए पूर्णतः अनुकूल थी। चूंकि चारण कवि दरबार में खूब जोर-जोर से सधे हुए स्वरों में काव्य पाठ करते थे। अहं तथा तेजोद्दीप्त अवस्था के अनुकूल स्वर एवं व्यंजनों के प्रयोग के कारण इस भाषा में एक गजब की प्रवाहमयता का आख्यान हुआ था। अतः यह भाषा उन परिस्थितियों में बहुत अनुकूल थी। उसी समय अपभ्रंश मिश्रित साहित्यिक ब्रजभाषा का भी काव्य में वीर काव्य के इतर प्रयोग होता था जिसे पिंगल का नाम दिया गया। उस समय दोनों ही भाषाओं का खूब प्रयोग किया गया। इन भाषाओं की परम्परा आगे आने वाले कालों में चलती रही। भक्तिकाल, रीतिकाल में इसका खूब प्रचलन रहा। डिंगल भाषा का चमत्कार कवि भूषण के काव्यों में देखते ही बनता है। वैसा तेज, वैसा प्रवाह और वैसा उत्साह अन्यत्र विरल ही है।

(6) प्रकृति चित्रण :- संस्कृत साहित्य में प्रकृति का अत्यंत मनोहारी वर्णन उपलब्ध होता है। अपभ्रंश साहित्य में भी प्रकृति का चित्रण अत्यंत मनोहारी बन पड़ा है। किन्तु आदिकाल तक आते-आते साहित्य में प्रकृति का स्थान स्वल्प हो गया है। इतनी समृद्ध परम्परा के बाद भी आदिकालीन साहित्य में प्रकृति चित्रण में आयी कमी का मूल कारण है सामंती वातावरण। इस काल में प्रकृति का चित्रवर्णन हुआ भी है तो आलम्बन एवं उद्दीपन दोनों ही रूपों में हुआ है। प्रकृति का स्वतंत्र [illegible] इस काल के साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। अतिरिक्त इस काल के बारहमासा में प्रकृति चित्रण का किन्तु वस्तुतः वर्णन एवं बारहमासा में प्रकृति चित्रण का चमत्कार देखते ही बनता है। विद्यापति, बीसलदेव रासो एवं खुमान रासो में भी प्रकृति का वर्णन बड़ा ही सुन्दर है किन्तु ऐसे स्थलों का अभाव भी इन्हें सीमित करता है।